पाठ 21

बस की यात्रा

(प्रस्तुत व्यंग्य में लेखक ने पुरानी बस को सजीव रूप में देखते हुए बस यात्रा को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है)

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएंगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था, इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं ? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी।

सदियांे के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे

सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह

बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है!

बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उस बस से जा रहे थे।

हमने उनसे पूछा-"यह बस चलती भी है ?" वह बोले-"चलती

क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी।" हमने कहा-"वही तो हम देखना

चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?"

गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।

हम आगा -पीछा करने लगे । डॉक्टर मित्र ने कहा-"डरो मत,

चलो! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।"

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखंे कह रही थीं। "आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा-राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।"

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे, जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमंे लगा कि यह गांधी जी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुजर रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ-दस मील चलने

पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रूक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस की रफ़्तार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे-भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतजार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रूकी। ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें की पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे-"बस तो फस्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफ़ाक की बात है।"

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी।

धीरे-धीरे बस की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रंेग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और

कहती- ‘‘निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।’’

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत जोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हंै। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रातिंकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहे पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते-‘‘वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया, पर टायर नहीं बदला।’’

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, जिंदगी इसी बस में गुजारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंजिल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी-मजाक चालू हो गया।

- हरिशंकर परसाई

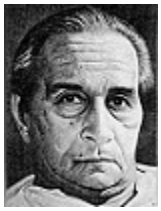

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त सन् 1924 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक ग्राम में हुआ था। आप हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं। अपने यथार्थमूलक व्यंग्य में आप ने भ्रष्टाचार, स्वार्थ, घूसखोरी, आदि पर चुटीली भाषा में चोट की है। पगडंडियों का जमाना, जैसे-उनके दिन फिरे, सदाचार का ताबीज, निठल्ले की डायरी, तट की खोज आदि आपके द्वारा लिखी पुस्तकें हैं। इनका देहावसान 10 अगस्त सन् 1995 को जबलपुर में हुआ था।

शब्दार्थ

निमित्त त्= कारण, साधन। डाकिन त्= डाकू का स्त्रीलिंग। वयोवृद्ध = बड़ा बूढ़ा। रंक त्= धनहीन गरीब। ग्लानि त्= अपने किसी कार्य पर उत्पन्न खेद, पश्चाताप। गोता त्= डुबकी लगाना। कूच करना त् = जाना। इत्तफाक त् = संयोग। बियावान = निर्जन स्थान। अन्त्येष्टि = दाह कर्म। प्रयाण = प्रस्थान। बेताबी = बेचैनी। फकीर = संसार त्यागी। क्षीण = घटा हुआ, जो कम हो गया हो। उत्सर्ग = त्याग, छोड़ना। बेताबी = बेचैनी।

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

1. अधिक धुआँ फेंकने वाले, जर्जर और बहुत पुराने वाहन वायु प्रदूषण और अन्य खतरों को बढ़ावा देते हैं। वायु प्रदूषण के अन्य घटक कौन से हैं ? इसका उल्लेख करते हुए वायु प्रदूषण पर एक लेख तैयार कीजिए।

2. वायु प्रदूषण तथा तथा अन्य प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए पोस्टर नारे तैयार कीजिए। पोस्टर अपने विद्यालय में लगाइए और लोगों को भी जागरूक कीजिए।

विचार और कल्पना

1. लेखक ने बस को सजीव रूप मंे देखा है। अनुमान लगाइए कि अगर लेखक बस से बातचीत करते तो उनके और बस के बीच में कहाँ-कहाँ और क्या-क्या बातें होतीं ?

2. आपने भी कहीं न कहीं की यात्रा अवश्य की होगी। अपनी किसी यात्रा के रोचक अनुभवों पर कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

व्यंग्य से

1. लोगों ने शाम वाली बस से सफ़र नहीं करने की सलाह क्यों दी थी ?

2. लेखक के मन में बस को देखकर श्रद्धा का भाव क्यों उमड़ पड़ा ?

3. बस तक लेखक और उनके मित्रों को छोड़ने आये हुए लोगों के मन में क्या-क्या भाव आ रहे थे ?

4. "बस सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौर से गुजर रही थी।" इस वाक्य से लेखक का क्या तात्पर्य है ?

5. "उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है।" लेखक ने यह किसके लिए, क्यों और किस संदर्भ मंे कहा ?

भाषा की बात

1. पाठ में कुछ शब्द जैसे-हाजिर, सफर उर्दू भाषा के शब्द हैं। ऐसे ही पाठ में आये अन्य

भाषाओं के शब्दों को छाँटकर लिखिए।

2. जिस वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। प्रश्नवाचक वाक्य मंे क्या, कहाँ, क्यों, कैसे आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु पाठ में कुछ ऐसे वाक्य हैं जिनके उत्तर में इन शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे-वह बोले चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी। हाँ जी, और कैसे चलेगी ?

इस प्रकार के पाँच वाक्य आप भी बनाइये।

3. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हंे अनेकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे- बस- यातायात के साधन के अर्थ में और पर्याप्त के अर्थ में प्रयुक्त होता है। नीचे दिये गये अनेकार्थी शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों मंे प्रयोग कीजिए।

कर कर

पत्र पत्र

सोना सोना

मन मन

इसे भी जानें

बी0एस0 का पूर्ण नाम 'भारत स्टेज' है। किसी भी गाड़ी के प्रदूषण सीमा की जानकारी इसी से प्राप्त होती है। बी0एस0 का मानक समय≤ पर बदलता रहता है। इसे पॉल्यूशन कण्ट्रोल बोर्ड निर्धारित और नियमित करता है। बी0एस0 के साथ लगने वाली संख्या मुख्य रूप से प्रदूषण की सीमा तय करती है। ये संख्या जितनी अधिक होगी प्रदूषण स्तर उतना ही कम होगा। गाड़ियों से पर्यावरण कम से कम प्रदूषित हो इसको ध्यान में रखते हुए भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 29 मार्च 2017 बुधवार को एक आदेश दिया जिसके

आधार पर अप्रैल 2017 से बी0एस0 3 की गाड़ियों की बिक्री पर पूर्णतः रोक लग गया। देश में B.S. 4 का नियम लागू हो गया है |